डबिंग : अनुवाद का दृश्य-श्रव्य रूप : उद्भव, विकास एवं महत्व

जयंतीलाल नटवरलाल राठोड़
पी-एच.डी. शोधार्थी अनुवाद अध्ययन, पंजी.क्र.: 2014/04/305/003
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र), भारत
मोबाइल : +91 9130524352, ई-मेल : jayantilalrathod7@gmail.com

अनुवाद - मनोभावों का शाब्दिक रूप - डबिंग - दृश्य-श्रव्य स्वरुप - समाज का आयना - उद्भव स्थान - अमेरिका, आवश्यकता - विकास, प्रचार-प्रसार, महत्त्व - योगदान

अनुवाद का दृश्य-श्रव्य रूप डबिंग है। मूलतः मनुष्य के मन में उठतें मनोभावों का शाब्दिक रूप का चित्रण अनुवाद के नाम से जाना जाता समाज है। मानसिक भावों के दृश्य-श्रव्य रूप को सिनेमा के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। सिनेमा समाज का आयना है। समाज की तादृश्य तस्वीर सिनेमा है। सिनेमा समाज का दृश्य-श्रव्य अनुवाद है, मन में उठते विचारों को, भावों को व्यक्त करने की शाब्दिक प्रस्तुति को अनुवाद कहते हैं, ठीक उसी प्रकार समाज में घटित घटनाओं का दृश्य-श्रव्य रूप सिनेमा के नाम से प्रसिद्ध है, एक समाज की घटनाओं को दूसरे समाज में पहुँचाने का काम समाज का यह दृश्य-श्रव्य रूप ही करता है। विश्व भर की अलग-अलग संस्कृतियाँ अपने रीति-रिवाज़ से भिन्न भाषित होती है, लेकिन वास्तव में वे अलग नहीं है। स्रोत भाषा के समाज की तस्वीर हू-ब-हू लक्ष्य भाषा के समाज में स्रोत भाषा के मूल भावों और अनुभूति के साथ प्रदर्शित करने का काम सिनेमा, अनुवाद के डबिंग स्वरूप से करता है। डबिंग का यह कार्य **'सर्व देवस्य नमस्कारम्, केशवम् प्रति गच्छामि'** के मूलार्थ पर आधारित है। सिनेमा और अनुवाद - दृश्य-श्रव्य – का संगम, त्रिवेणी संगम कहा जा सकता है – **'विचारों, मनोभावों की अनुभूति और घटना का तादृश्य चित्रण'** दुनिया के एक सूत्र में **'बाबेल की मीनार की कल्पना'** के आधार पर एक बंधन में जोड़े रखने के सही आदर्श का प्रस्तुतिकरण है।

डबिंग अनुवाद का दृश्य-श्रव्य रूप है। डबिंग का प्रयोग अधिकांश एक भाषा की फिल्मों, धारावाहिकों को दूसरी भाषा में अनुदित करने के लिए होता है। दृश्य-श्रव्य अनुवाद को डबिंग के नाम से लोग जानते हैं। 'डबिंग' एक विशिष्ट पारिभाषिक शब्द है, जो अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होता है। डबिंग एक मूल

रचना को नई मूल रचना में रूपांतरण करने की एक कला है। छोटी से छोटी बातों का एक नई भाषा में अनुवाद करना और स्थानीयकरण करना एक मुश्किल कार्य है।

डबिंग और भाषा एक दूसरे से कभी न बिछड़ने वाले अभिन्न अंग हैं। मानव जीवन और समाज के साथ जुड़ी हुई संवेदनाओं के वाहक हैं ये दो शब्द, इनसे जुड़ें हैं विभिन्न समाज, संस्कृति, रीति-रिवाज़, खान-पान, पहनावा, कला, इतिहास और कई अनगिनत पहलू, जिनसे परिचित होने के लिए बेताब हैं दुनिया के लोग, जो मानव सभ्यता को जानना चाहते हैं। डबिंग और भाषा के संबंध में अधिक जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि भाषाई समस्या से कैसे निपटा जा सकता है ? किसी दो भाषाओं को संपूर्ण रूप से लिखना, पढ़ना एवं उचित रूप से उच्चरित करने वाला व्यक्ति ही भाषाई समस्याओं का निपटारा कर सकता है। दो भाषाओं को संपूर्ण रूप से जानने वाला अनुवादक नाम से पहचाना जाता है, उसका कार्य अनुवाद के नाम से जाना जाता है।

प्राचीन भारत में शिक्षा की मौलिक परंपरा थी। गुरु जो कहते थे , शिष्य उसे दुहराते थे, इस दुहराने को 'अनुवचन' या 'अनुवाद' कहते थे। अनुवाद भी मूलतः यही था, बाद में इसका अर्थ, वेद का कोई भाग हो गया जिसे गुरु से सुनकर दुहराया जाए या सीखा जाए।[1]

चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ **'प्राप्तस्य पुनः कथने'** या **'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने'** अर्थात् **'पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना'** आदि दिया गया है।[2]

हिंदी शब्द 'अनुवाद' के प्रति शब्द के रूप में अंग्रेज़ी में *'Translation'* शब्द लैटिन भाषा का है, जो दो शब्दों *'Trans'* और *'Lation'* के योग से बना है। *'Trans'* का अर्थ है 'पार' और *'Lation'* का अर्थ है – 'ले जाना या नयन।' इस प्रकार *'Translation'* का अर्थ है 'एक पार से दूसरे पार ले जाने की क्रिया।'[3]

वेबस्टर्स थर्ड इंटरनेशनल डिक्शनरी में ट्रांसलेशन का अर्थ दिया है – *'The removal, transfer or conveyance from one place or condition to another.'*[4]

---

1. सिंह, राम गोपाल.(2009). अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ. गाजियाबाद : साहित्य संस्थान.पृ.सं.2.
2. सिंह, राम गोपाल.(2011). अनुवाद के विविध आयाम. रोहतक : शांति प्रकाशन. पृ.सं.12.
3. सिंह, राम गोपाल.(2009). अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ. गाज़ियाबाद : साहित्य संस्थान.पृ.सं.5.
4. वही.पृ.सं.5.

सेंट जेरोम को विश्व का ऐसा पहला व्यवस्थित अनुवादक माना जाता है, जिसने अनुवाद करने के साथ-साथ अनुवाद विषयक समस्याओं का भी निरूपण किया। जेरोम की भावानुवाद में आस्था थी, अतः उसने अनुवाद में 'शब्द की जगह शब्द नहीं, भाव की जगह भाव' रखने पर जोर दिया।'[5]

"Nothing which is harmonized by the bond of the muses can be changed from its own to another language without destroying all its sweetness."[6]

दांते के अनुसार, "जो वस्तु वाणी के सूत्र में पिरो दी गई हो तो उसे एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने पर उसकी सारी मधुरता नष्ट हो जाती है।"

अज्ञेय जी के अनुसार, "समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त या अदृश्य आदि को भाषा या रेखा या रंग में प्रस्तुत करती है।"[7]

अनुवाद के संबंध में कहा गया है - "अनुवाद यदि सुंदर होगा तो मूलनिष्ठ नहीं होगा और मूलनिष्ठ होगा तो सुंदर नहीं होगा।" इस कथन को स्त्री की वफ़ादारी और सुंदरता के साथ जोड़ा गया है। अगर स्त्री सुंदर होगी तो वफ़ादार नहीं होगी, और अगर वफ़ादार होगी तो सुंदर नहीं होगी। इसका अर्थ है कि वफ़ादार स्त्रियाँ सुंदर नहीं होती हैं और सुंदर स्त्रियाँ वफ़ादार नहीं होती हैं।

"Translation is never satisfying." – Ravindranath Tagore[8] गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, "अनुवाद पूर्ण संतोष देने वाला नहीं होता। फिर भी, उन्हीं के द्वारा उन्हीं की अमर कृति 'गीतांजलि' के अंग्रेज़ी अनुवाद पर उन्हें नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ जो साहित्य के क्षेत्र में विश्व का सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार है, जिसको सारे विश्व भर में सराहा गया।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है। अनुवाद कथनतः निकटतम सहज प्रतिप्रतिकन प्रक्रिया है।" [9]

---

5. वही.पृ.सं.7.
6. सिंह, राम गोपाल.(2009). अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ. गाजियाबाद : साहित्य संस्थान.पृ.सं.8.
7. वही.पृ.सं.13.
8. वही.पृ.सं.13.
9. वही.पृ.सं.13.

दो अलग-अलग भाषा जानने वाले लोगों की भाषाई दूरियाँ मिटाने, दोनों भाषाओं में माहिर हो ऐसे लोग, दो अलग-अलग भाषा जानने वाले लोगों के बीच में सेतु का काम करके उनकी भाषाई दूरियाँ मिटाने का काम करने वाले लोग, आम भाषा में दुभाषिया के नाम से जाने जाते हैं।

Dubbing is the post-production process of recording and replacing voices on media, such as movies, TV shows, or interviews. The voices of the actors shown on the screen are replaced by those of different actors who translate the original audio into a different language.

डबिंग ध्वनि मुद्रण करने की और मीडिया जैसे कि फिल्मों, टी.वी. शो या साक्षात्कार की ध्वनियों को बदलने की पोस्ट-प्रोडक्शन प्रक्रिया है। पर्दे पर प्रस्तुत कलाकारों की आवाज़ को स्वरदाता कलाकार द्वारा अपनी आवाज़ में प्रतिस्थापन करने की प्रक्रिया डबिंग है, जो मूल ध्वनि को एक अलग लक्ष्य भाषा में अनुवाद करना है। ध्वनि के साथ दृश्य मुद्रण करना भी डबिंग ही है।

"Dubbing always occurs at the tail end of the process. They will spend as much time and money as they've got rewriting and reshooting, but when it comes to dubbing they expect the mix to happen right the first time."[10]

- *Graham V Hartstone, Head of Post-Production at Pinewood*

ग्राहम वी. हार्टस्टोन, पिनवुड स्टूडियो पोस्ट प्रोडक्शन विभाग के प्रमुख के अनुसार – "डबिंग हमेशा प्रक्रिया के अंत में होती है। निर्माता पुनः लेखन और पुनः शूटिंग में चाहे कितना ही समय और धन का खर्च करेंगे, लेकिन डबिंग की बात आते ही प्रथम प्रयास में ही पूर्ण और सही होने की अपेक्षा करते हैं।"

Dubbing is the creative process used for adapting TV and film content around the world. The translated script and the audio track are both created to sync with the lip movements of the on-screen speaker as much as possible."[11]

[10]. *A Brief History of Film Dubbing - Part -I, Maxwell Steer* http://msteer.co.uk/analyt/jfilmdubbing1.html

[11]. *Lip-sync dubbing*

डबिंग दुनियाभर में टी.वी. और फिल्म सामग्री के अनुकूलन की रचनात्मक प्रक्रिया है। अनूदित कथानक और ध्वनि पथ (साउंड ट्रैक) दोनों को पर्दे पर संवाद करने वाले के ओष्ठ आंदोलन (हल-चल) के साथ संभवतः मिलान करने की क्रिया है। (रिकॉर्ड किए गए संवाद अथवा गीत के बोल के उच्चारण के अनुसार ओष्ठ मिलाने की क्रिया - लिप सिंक डबिंग।)

"Dubbing is sometimes confused with automated dialogue replacement (ADR), also incorrectly known as 'additional dialogue recording,[1] in which the original actors re-record and synchronize audio segments. Outside of film industry, the term 'dubbing' most commonly refers to the replacement of the voices of the actors shown on the screen with those of different performers speaking another language."[12]

डबिंग कभी-कभी स्वचालित संवाद प्रतिस्थापन *(ADR – Automated Dialogue Replacement –* स्वचालित संवाद प्रतिस्थापन*)* के साथ भ्रमित होता है और अशुद्ध रूप से 'अतिरिक्त संवाद रिकॉर्डिंग' के रूप में जाना जाता है, जिसमें मूल अभिनेता पुनः रिकॉर्ड करते हैं और ध्वनि खंडों का सामंजस्य करते हैं। फिल्म उद्योग के बाहर, 'डबिंग' शब्द सामान्य रूप से पर्दे पर दिखाए गए अभिनेता/अभिनेत्री की आवाज़ की प्रतिस्थापन हेतु दूसरी भाषा बोलने वाले विभिन्न स्वरदाता कलाकारों के लिए संदर्भित है।

दृश्य-श्रव्य अनुवाद का दूसरा नाम डबिंग है। फिल्म उद्योग का अत्यंत प्रचलित शब्द है 'डबिंग'। फिल्मों में फिल्म की शूटिंग करते समय कलाकारों द्वारा उच्चरित संवादों के साथ अन्य अनेक व्यधान युक्त ध्वन्यांकित रिकॉर्ड ध्वनियों को हटाने के लिए की गई सामान्य प्रक्रिया है। सामान्यतः फिल्म उद्योग में व्यापक अर्थ में यह प्रक्रिया डबिंग के नाम से प्रचलित है। डबिंग थियेटर में कलाकार अपनी फिल्म के शॉट्स देखता जाता है और ओष्ठों के उतार चढ़ाव को पर्दे पर देखकर संवाद को पुनः माइक्रोफोन से बोलता है। इस पुनः बोले गए पहले रिकॉर्ड हुई आवाज़ के स्थान पर रिकॉर्ड किया जाता है।[13]

12. *Lip-sync dubbing*

13. सिंह, राम गोपाल.(2009). अनुवाद के विविध आयाम. रोहतक : शांति प्रकाशन. पृ.सं.267.

डबिंग एक ऐसी कला है जिसके सिवा विश्व की दृश्य-श्रव्य सूचना का प्रसारण असंभव है, इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता। आज दुनिया भर की भाषाओं में फिल्में बन रही है तथा इन फिल्मों के निर्माण पर समय एवं धन इतना अधिक खर्च होता है कि एक ही फिल्म को अलग-अलग भाषाओं में बनाना फिर भी संभव नहीं होता। ऐसे में बीच का रास्ता निकालना सहज स्वाभाविक ही है और वह है डबिंग।

डबिंग का उद्भव स्थान अमेरिका रहा है। 'द ज़ाज़ सिंगर' 1927 में बनी पहली हॉलीवुड़ फिल्म थी, जिससे डबिंग का प्रारंभ हुआ। तकनीकी विकास के चलते डबिंग तकनीकी में सुधार आते गए और डबिंग विधा अपने उत्कृष्ट शिखरों को प्राप्त करने लगी।

डबिंग एक भाषा यानी स्रोत भाषा की जगह लक्ष्य भाषा में अनुवाद करके संवाद करके लक्ष्य भाषा के दर्शकों के लिए उस भाषा के चित्र मूलरूप में रखने के साथ भाषा में परिवर्तन करके लक्ष्य भाषा की फिल्म बनाना डबिंग है। डबिंग के इस स्वरूप में अनुवाद के माध्यम से भाषा परिवर्तित हो जाती है। मूलतः स्रोत भाषा में निर्मित फिल्म के संवादों, गीतों आदि को डबिंग के बाद दूसरी भाषा में डाल दिया जाता है। इस तरह से, डबिंग के इस स्वरूप में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। स्रोत भाषा के स्थान पर लक्ष्य भाषा में उसके अनुवाद को संवादों, गीतों आदि के रूप में रिकॉर्ड करके मूल फिल्म में स्रोत भाषा के स्थान पर भरा जाता है। इस तरह से, अनुवाद के माध्यम से की गई डबिंग भी एक कला है। डबिंग कार्य हेतु अनुवादक के सतही ज्ञान से कुछ भी काम चलने वाला नहीं है अपितु उसे रंगकर्म का गहन ज्ञान होना भी चाहिए, तभी ही वह शब्दों एवं ध्वनियों के मर्म को समझ पाएगा तथा स्रोत भाषा के शब्दों के आकार एवं उच्चरित रूप में मुखाकृति के अनुरूप ढूँढ़कर तब्दील कर पाएगा।

डबिंग एक भाषा की फिल्म को दूसरी भाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया है। जिसके अंतर्गत **स्वरदाता कलाकारों के चुनाव** *(Casting)* **की प्रक्रिया** है - जैसे कि स्वरदाता के ओष्ठ आंदोलनों का तालमेल पर्दे पर दिखाई देने वाले अभिनेता के ओष्ठ आंदोलनों के साथ हो जाए। इसके बाद, मूल अभिनेता की आवाज़ से सामंजस्य स्थापित करने वाली विशेषताओं के प्रति संवेदनशीलता को मूल रूप अखंडता से पार्श्व स्वर *(Voice Over)* के साथ कलाकारों की संवेदना प्रदर्शित करती है।

रिकॉर्डिंग की विधि में, वीडियो देखने के दौरान कलाकार हस्तलिपि *(Script)* से पढ़ते हैं और बीप आवाज़ की प्रतीक्षा करते हैं कि उनके संवादों की रेखा *(Line)* आ रही है। 'रिदमो बैंड' तकनीक में फिल्म स्क्रीन के निचले

भाग में संवाद स्क्रॉल करती है और विभिन्न स्थानों पर संपीडित होती है, यह दर्शाती है कि चरित्र के मुँह के साथ समय एवं शब्दों को कैसे इंगित किया जाता है।

स्वरदाता कलाकार की आवाज़ ध्वनिमुद्रित हो जाने पर, प्रक्रिया संपन्न करने हेतु, ध्वनि संपादक, स्वरदाता कलाकार द्वारा उच्चरित संवादों को एम और ई प्रक्रिया से कलाकार के होंठों के आंदोलनों के साथ तालमेल कर लेते हैं, **मिश्रण** *(Mixing)* कर लेते हैं, जिससे सब एकरूप हो जाए। प्रक्रिया समाप्ति हेतु, एक बार स्वरदाता अभिनेताओं की आवाज़ ध्वनि मुद्रित हो जाने के बाद, ध्वनि संपादक, स्वरदाता कलाकारों द्वारा लिप-सिंक किए गए संवादों को ठीक से ट्यून करते हैं। ध्वनि मिश्रक फिर एम एंड ई के साथ संवाद मिश्रण करते हैं ताकि सब कुछ पूरी तरह से समन्वित हो।

बिन-शैली पार्श्व स्वर (*Un-style Voice Over)* साक्षात्कार फुटेज में आमतौर पर देखी जाने वाली एक शैली है। प्रत्येक बार जब स्वरदाता/अभिनेता स्क्रीन पर होते हैं, तब लिप-सिंक अधिक महंगा होगा और मूल आवाज़ को सुननी होगी। इस शैली में, कलाकार की खुद की आवाज़ उसकी मूल भाषा या मातृभाषा में सुनी जा सकती है। फिर, कुछ सेकंड के बाद, उनके ध्वनि स्तर की मात्रा घटती जाती है और पार्श्वभूमि में एक अदृश्य प्रतिभा संपन्न आवाज़ सी आती है। चूँकि मूल भाषा अभी भी सुनाई दी जाती है, इसलिए आवाज़ की सत्यता की अनुभूति दर्शकों को होती है।

लिप-सिंक डबिंग अनूदित ध्वनि के साथ मूल संवाद को प्रतिस्थापित करता है। जब फिल्म देखते हैं, तब मूल ध्वनि पथ *(Sound Track)* नहीं सुनाई देता है और ऐसा लगता है, जैसे – अभिनेता खुद मूल रूप से अनूदित भाषा बोल रहा था।

ध्वनि प्रतिस्थापन *(Voice Replacement)*, स्वरदाता कलाकार *(Voice Artist)* की आवाज़ के साथ शुरू होती है और मूल ध्वनि के साथ संपन्न होती है, लेकिन यह ढ़ाँचे में संपूर्ण रूप से सटीक बैठती नहीं है। पर्दे पर चमकने वाले अभिनेता के होंठ आंदोलनों के साथ आवाज़ का तालमेल नहीं होता है। इस प्रकार के डबिंग के प्रयोग आमतौर पर कॉर्पोरेट, ई - लर्निंग और सूचनात्मक वीडियो के लिए होते हैं।

The term is originated in the United States and may have applied to 'doubling' or copying the Vitaphone sound discs that were the first successful attempts at synchronising

sound with picture. Or it may have originated with 'doubling' or post-synchronising the actors' voices, something that was necessary very early on. The rush to convert to sound was so intense that even films already shooting were literally converted to sound overnight.[14]

डबिंग और अनुवाद कभी अलग हुए ही नहीं है या यूँ कहिए कि वे कभी अलग-अलग थे ही नहीं, हैं नहीं और न कभी होंगे। मानवीय भावनाओं से भरसक हल्के से स्पंदनों को एक ही पल में शोलों में तब्दील करने वाली अनुवाद की दृश्य-श्रव्य विधा डबिंग है। डबिंग सिर्फ, फिल्म या धारावाहिक ही नहीं होता है, अभिनेता की भावनाओं को भी प्रदर्शित करता है और आवाज़ की डबिंग भी एक हद से गुज़र कर कभी-कभी तो मूल अभिनेता या अभिनेत्री की आवाज़ को भी भूला दे जाने वाली असर छोड़ जाती है, लेकिन इस तकनीक की आवश्यकता, जो सो कलाकार की अनुपस्थिति में या उनकी कायमी बिदाई के बाद, उनके बाकी संवादों को संपन्न करने हेतु किया जाता है। अगर निर्देशक अभिनेता की संवाद शैली से संतुष्ट नहीं है तो जरूर आग्रह करेगा कि अपने संवाद रि-रिकॉर्डिंग कर ले।

कुछ ऐसे छोटे मधुर गानों का निर्माण भी डबिंग के माध्यम से हुआ है, "जंगल जंगल बात चली है, पता चला है, अरे चड्डी पहन के फूल खिला है, फूल खिला है।" 'जंगल बुक' फिल्म की हिंदी में डबिंग होने से बच्चों के साथ-साथ बड़ों की जबान पर भी यह गीत घर कर गया है। 'जुरासिक पार्क' फिल्म के भी कई भाग अलग-अलग भाषाओं में डब होकर प्रस्तुत होने से प्रत्येक भाषा में इस फिल्म ने डबिंग के माध्यम से खूब कमाई की।

सवाक फिल्मों की शुरुआत से ही डबिंग चर्चा में रही है। फिल्मों में डबिंग की सामान्य प्रक्रिया को फिल्म की शूटिंग के समय कलाकारों द्वारा बोले गए संवादों के साथ अन्य अनेक ध्वन्यंकित ध्वनियों के रिकॉर्ड हो जाने को हटाने के लिए किया जाता रहा है। डबिंग थियेटर में कलाकार अपनी फिल्म के शॉट्स को देखता जाता है और ओठों के उतार चढ़ाव को पर्दे पर देखकर संवाद को पुनः माइक्रोफोन से बोलता है। इस पुनः बोले गए संवाद को पहले रिकॉर्ड हुई व्यघान युक्त आवाज़ के स्थान पर रिकॉर्ड कर ली जाती है। इसी प्रक्रिया से आगे दूसरी भाषा में सफल फिल्मों की डबिंग सूची में राज कपूर की 'आवारा' फिल्म रूस के दर्शकों को इतनी भा गई कि रूसी भाषा में इसकी डबिंग ने वहाँ के दर्शक राज कपूर के दीवाने बन गए। "आवारा हूँ" गीत आज भी प्रत्येक रूसी भाषी के जबान पर है।

[14]. *A Brief History of Film Dubbing - Part I 4/28/2015 1/3 Maxwell Steer* http://msteer.co.uk/analyt/filmdubbing1.html

निर्माता, निर्देशक जेम्स कैमरोन की अमर कृति 'टाइटेनिक' 1997 में प्रदर्शित फिल्म ने सफलता के सारे कीर्तिमान एक ओर कर दिए। फिल्म 20 वीं शताब्दी की शुरूआत में सन 1912 के 14 अप्रैल की रात 11 बज कर 39 मिनट पर आरएमएस टाइटेनिक जल पोत के हिमखंड से टकराने से 11 बज कर 40 मिनट पर आरएमएस टाइटेनिक जल पोत दुर्घटनाग्रस्त होकर, दुर्घटना से ठीक 2 घंटें और 40 मिनट बाद 15 अप्रैल सुबह 2 बज कर 20 मिनट पर न्यू फाउंड लैंड के किनारे से 640 मील दूर उत्तरी अटलांटिक महासागर में 1500 से अधिक यात्रियों और जल पोत के कर्मियों एवं 7 कुत्तों के संग समाधिस्थ होने की सत्य घटना पर आधारित मानवीय संवेदनाओं से प्रचुर फिल्म हैं, जिसने विश्व भर के दर्शकों की संवेदना, प्रेम एवं सांत्वना डबिंग के माध्यम से अर्जित की। डबिंग के माध्यम से 'टाइटेनिक' फिल्म ने एक सनातन सत्य की पुष्टि की है कि मानव सर्जित जड़ वस्तुएँ एवं अपनी वंश परंपरा ही नाशवंत हैं; अमर नहीं है तो मानव सर्जन कैसे अमर हो सकता है ? श्रीमद् भागवत गीता के अनुसार जो आता है, सो, जाता है। परिवर्तन संसार का प्रकृतिदत्त नियम है।

मानव चाहे कितना ही अत्याधुनिक क्यों न हो जाए या वैज्ञानिक आविष्कारों एवं तकनीकी विकास के कारण अपने आप को कितना ही प्रगतिशील समझ ले, अपितु अदृश्य, अगम्य संसार को चलाने वाली शक्ति को मानना ही पड़ता है, उसकी सर्वोपरिता को स्वीकृत करना ही पड़ता है, उसके आगे नतमस्तक होना ही पड़ता है। कुदरत ने मानव के अहंकार को कभी सहन किया ही नहीं है। अहंकारी होने के साथ-साथ मानव मन संवेदनाओं से भरसक होने के कारण कोई नजदीकी रिश्ता न होते हुए भी, विश्व के किसी भी भू-भाग में जब कोई बड़ी दुर्घटना होती है, तो समग्र मानव समुदाय व्यथित हो जाता है और अपनी संवेदना और आर्थिक सहाय उन पीड़ितों की सहायतार्थ प्रवाहित होनी शुरू हो जाती हैं, दुःख में सहभागिता करने की भारतीय मानसिकता और भावना **वसुधैव कुटुम्बकम्** की सार्थकता को सिद्ध करने वैश्विक रूप धारण कर लेती है।

अनुवाद की डबिंग विधा ने 'टाइटेनिक' फिल्म के माध्यम से संकीर्ण होती हुई उदात्त मानवीय भावनाओं को जागृत करने का प्रभावकारी कार्य किया है एवं आज की वैश्विक एवं भारतीय मानसिकता 'मेरा क्या' या 'मुझे क्या' के मनोविचारों से युक्त मतलब परस्त संवेदनाहीन मानव समुदायों के अंतर्मन की सुषुप्त संवेदनाओं और भावनाओं को जागृत कर आपातकालीन समय में पीड़ितों के प्रति अपने कर्तव्यों की प्रतीति करा कर मानव होने की अनुभूति कराने का अति महत्वपूर्ण दायित्व संपन्न किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिंदी :

1. सिंह, राम गोपाल. (2009). अनुवाद विज्ञान : स्वरूप और समस्याएँ. गाजियाबाद : साहित्य संस्थान
2. सिंह, राम गोपाल. (2011). अनुवाद के विविध आयाम. रोहतक : शांति प्रकाशन

अंग्रेज़ी :

1. *A Brief History of Film Dubbing - Part I, Maxwell Steer*
   http://msteer.co.uk/analyt/jfilmdubbing1.html
2. *Lip-sync dubbing*